P.G Ist Semester

क्रियात्मक विकास Motor Development

बाल्यावस्था (2 से 6 वर्ष) में क्रियात्मक विकास (Motor development during child-hood →

परिभाषा एवं अर्थ —

क्रियात्मक विकास से तात्पर्य बालक के भीतर क्रियात्मक क्षमताओं (Motor Abilities) तथा क्रियात्मक कौशलों (Motor skill) के विकास से है। इसके द्वारा बालक अपनी मांसपेशियों पर नियंत्रण करना सीख जाता है, जिससे बालक अपनी क्रियाओं को धीरे 2 नियंत्रित करना सीख जाता है। जन्म के बाद जो क्रियाएँ अनिश्चित तथा अनियंत्रित होती हैं, वही बालक के स्वयं के नियंत्रण में आ जाती हैं। क्रियात्मक विकास को "गत्यात्मक योग्यता का विकास" भी कहा जाता है।

जेम्स ड्रेवर (James Drever) के अनुसार →

"क्रियात्मक विकास का सम्बन्ध उन रचना एवं कार्यों से है, जो मांसपेशियों की क्रियाओं से सम्बन्धित है, इसका सम्बन्ध जीव की उस अनुक्रिया से है जो वह किसी परिस्थिति विशेष के प्रति करता है।"

हरलॉक (Hurlock) 1978 — "शरीर की विभिन्न मांसपेशियों पर नियंत्रण का विकास ही क्रियात्मक विकास है।"

क्रियात्मक विकास गर्भकालीन अवस्था (prenatal period) के तीसरे माह से ही प्रारम्भ हो जाता है। बालक के जन्म के बाद क्रियात्मक विकास की गति तीव्र हो जाती है। लगभग 6 वर्ष की अवस्था तक बालक अपनी अधिकांश मांसपेशियों की गतियों पर नियंत्रण करना सीख जाता है।

बचपनावस्था (Babyhood) में ही जब बालक का इनकी मॉंसपेशियों और शरीर पर नियंत्रण हो जाता है, तब उसके हाथों और पैरों में क्रियात्मक कौशलों (Motor skill)

का विकास प्रारम्भ हो जाता है।

बचपनावस्था के अधिकांश

कौशलों (Skill) का विकास बाल्यावस्था (childhood) में पूर्ण होता है। बाल्यावस्था में बालक अपेक्षाकृत अधिक स्वतंत्र होता है, उसके उपद्रव और आदि पकने का असर नहीं होता है। इस अवस्था में जो क्रियात्मक कौशल बच्चे सीखते हैं, उनमें अधिकांश बालक के लिए लाभदायक होते हैं। उसके क्रियात्मक कौशल उसके सामाजिक सम्पर्क बढ़ाने में सहायक होते हैं। (M.K. Johnston et. al, 1966)

बालक के कौशलों का विकास

बालक की परिपक्वता और अभ्यास आदि कारकों पर मुख्यतः निर्भर करते हैं। स्वयं भोजन करना (self feeding) तथा स्वयं कपड़े पहिनने के (self dressing) के कौशलों का विकास इस अवस्था तक पूर्ण हो जाता है। इस अवस्था के अन्त तक बालक ~~बालक~~ स्वयं भोजन करने में इतना निपुण हो जाता है कि वह भोजन करते खूब कम गिराता है। P.L. Lyness 1951 के अनुसार → यदि इस अवस्था (6 वर्ष) में बच्चों को स्वयं कपड़े पहिनने का अवसर दिया जाता है तो बच्चे लगभग 6 वर्ष की अवस्था तक प्रत्येक प्रकार के कपड़े पहिन और उतार सकते हैं।

लगभग 5 वर्ष की अवस्था तक बालक ब्रश करना, कंघी करना तथा नहाने लग जाता है। ~~लगभग~~ 5-6 वर्ष का बालक गेंद फेंकने और गेंद लपकने (~~Catching~~ Catching) में दक्ष हो जाता है। 6 वर्ष के बच्चों में कागज की नाव बनाना, सरल आकृतियाँ बनाना, उनमें रंग भरना जैसे क्रियात्मक योग्यताएँ विकसित होने लगती हैं। 6 वर्ष की अवस्था तक अक्षरों को अच्छी तरह पहिचानने लगता है।

5-6 वर्ष की अवस्था तक बच्चों के पैर के कौशल (Leg skills) विकसित होने लगते हैं। इस अवस्था में उछलना, कूदना, (रस्सी कूदना, दौड़ना, चढ़ना) के कौशल का विकास हो जाता है। हालांकि 3 वर्ष की अवस्था से ही यह कौशल विकसित होने लगता है।